पवित्र शक्तियों का ईश्वरीय सेवा में समर्पण

अरावली श्रृंखला के मध्य स्थित, प्रकृति के अनोखे आँचल में बसा एक स्थान, जहाँ पर पवित्रता को सम्पूर्णतया धारण करने वाली दिव्य आत्माओं से सुसज्जित एक प्रांगण, जहाँ की महक सभी को अपनी तरफ ही आकर्षित कर लेती है। वहीं एक अनोखा दृश्य था जिसमें तीन सौ पवित्र रचनाओं, कुमारियों ने परमपिता परमात्मा के सर्वोत्तम परिवर्तन के कार्य के लिए स्वयं को आजीवन समर्पित किया। जिसकी आँखों देखी कुछ झलकियाँ आपके समक्ष हैं...

समर्पण समारोह के दौरान देश के कोने कोने से आईं तीन सौ पवित्र बहनें तन मन धन से ईश्वरीय सेवा में समर्पित होने का शपथ ग्रहण करते हुए।

सावन में शिव की हो गयी तीन सौ युवा बहनें, समर्पण समारोह में अभिभावक भी उपस्थित

शांतिवन। सावन मास परमात्मा भोलेनाथ शिव का मास माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि परमात्मा शिव की दिल से पूजा अराधना करने से सहज ही प्रसन्न हो जाते है। परन्तु यदि सावन मास में जब परमात्मा शिव को ही अपना वर बना लें तो इससे अच्छा और क्या हो सकता है। ऐसा ही कुछ हुआ ब्रह्माकुमारी संस्था के शांतिवन के भव्य डायमण्ड हॉल में, जब देश के कोने कोने से आयी तीन सौ बाल ब्रह्मचारिणी युवा बहनें अपने जीवन की डोर परमात्मा शिव को सौंपकर संस्थान में समर्पित हो गयीं। इस अवसर पर उनके माता पिता और नाते रिश्तेदार भी उपस्थित थे।

इस कार्यक्रम में आये हज़ारों लोगों को सम्बोधित करते हुए ब्रह्माकुमारी संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने कहा कि यह जीवन कई जन्मों से उत्तम है। जिसके जीवन में स्वयं परमात्मा का वास हो जाता है, वह हमेशा के लिए बुराइयों से मुक्त हो जाता है। परमात्मा की तन मन धन से सेवा करने के लिए आजीवन समर्पित होना महान पुण्य का कार्य है।

कार्यक्रम प्रबन्धिका ब्र.कु. मुन्नी ने इन पवित्र युवा बहनों से आह्वान किया कि वे जीवन में उच्च आदर्श एवं मूल्यों को धारण कर महान बनें और दूसरों के लिए प्रेरणादायी बनें।

संस्था के महासचिव ब्र.कु. निर्वैर ने कहा कि हमारी बहनों ने यह सिद्ध कर दिया है कि यदि नारी चाहे तो विश्व को बदल सकती है, किसी भी कुरीति और बुराइयों को समाप्त कर सकती है। ये बहनें खुद का सकारात्मक बदलाव करते हुए समाज को भी बदल कर ही रहेंगी, जहाँ सभी सुख-शांति और चैन से रहेंगे।

कार्यक्रम में संस्थान के अतिरिक्त महासचिव ब्र.कु. बृजमोहन, शांतिवन प्रबन्धक ब्र.कु. भूपाल, ब्र.कु. अमीरचंद समेत कई लोगों ने अपने अपने विचार व्यक्त किये।

क्या है समर्पण: ब्रह्माकुमारी संस्था के सम्पर्क में आने के बाद कम से कम पाँच साल तक प्रशिक्षु के तौर पर राजयोग मेडिटेशन के साथ संस्था के नियमों पर सम्पूर्ण रूप से चलने वाली बहनों का समर्पण होता है। जिसमें उनके माता पिता की भी सहमति होती है। इसके लिए पूरी तरह से ईश्वरीय अलौकिक रस्में निभायी जाती हैं।

सेवा स्थानों पर होता है स्थानान्तरण: समर्पण के बाद सभी बहनें संस्थान के देशभर में फैले सेवाकेन्द्रों पर चली जाती हैं। वहाँ रहकर अपने जीवन की आध्यात्मिक उन्नति के साथ दूसरों के जीवन में भी उन्नति कराकर सुकून लाने की सेवा करती हैं और हमेशा ईश्वरीय सेवाओं में तत्पर रहती हैं।

भव्य स्वागत: समारोह के आरंभ में कुमारियों को पीली चुन्नियों में सजाकर बैंड बाजों के साथ उनका भव्य स्वागत किया गया, जिसमें उनके माता पिता तथा परिवार के लोग भी शरीक हुए।

शपथ ग्रहण समारोह: कार्यक्रम के बीच समर्पण के दौरान समर्पित होने वाली बहनों को अपने लक्ष्य और श्रेष्ठ कर्म के लिए उनसे दृढ़ प्रतिज्ञा करायी गयी, जिससे कि वे अपने लक्ष्य में कामयाब हो सकें और सबका कल्याण भी कर सकें।

क्या कहना है इस अद्भुत दृश्य का, जिसमें रथी, सारथी, दोनों छवि अनुपम है, आँखों से ओझल ना होने वाला दृश्य, जिसे चिरकाल तक याद रखा जाए, उसकी झलकियाँ यहाँ पर दिखीं। मनोरम और मनोहारी छवि जिसमें एक पवित्र कन्या, परम पवित्र परमात्मा के साथ जुड़कर अपना जीवन, परमात्म कार्य में सम्पूर्ण रूप से समर्पित करने जा रही हो, और जाए भी क्यों ना! क्योंकि वह सच्चा पति-परमेश्वर है, जिसे कभी भी किसी तरह की हानी जीवन में होने वाली नहीं है।

आज इस कलियुग के दौर में कोई भी पूर्णतया सुरक्षा की ज़िम्मेवारी ले नहीं सकता, लेकिन परमात्मा ही एक ऐसा साथी है, जिसके साथ हम हर समय सुरक्षित महसूस कर सकते हैं। पवित्रता के आधार से जीवन जीना, वो तो सोने पर सुहागा हो ही जायेगा।

आत्मबल से इस पथ पर चलने वाली कुमारियों ने स्वेच्छा से इस जीवन को चुना है, और विश्व परिवर्तन के इस महाकुम्भ में अपना सबकुछ दे दिया है। अब उनके लिए यही है, बस परमात्मा। यह कार्य इतना बड़ा है कि उसके लिए पवित्रता ही एक नींव है, जो इस कार्य को अंत तक थामे रख सकती है। आप सोचिए, आधुनिक युग में लोग क्या-क्या नहीं कर रहे हैं! आज के युवक-युवतियाँ दुनिया की भ्रान्तियों में फँसे पड़े हैं। उसमें से निकल कर सत्य राह चुनना काबिले तारीफ है।

खुद भी पवित्र बने, औरों को भी बनाया है, आज इसी की ज़रूरत है सभी को। थोड़ी सी ब्रह्माकुमारियाँ अपने इस जीवन से बहुतों का जीवन पवित्र बना रही हैं। यही बहनें ही दरअसल दुर्गा, गायत्री, पार्वती हैं, जिनकी आप महिमा गाते हैं।

इन पवित्र कन्याओं को, जीवन को जीवनमुक्ति दाता से जोड़ने वाली, अपने को सर्वश्रेष्ठ और सभी के जीवन को सर्वश्रेष्ठ बनाने के निमित्त आत्माओं को शत् शत् नमन्।

समारोह के दौरान समर्पित होने वाली पवित्र कुमारियों के साथ कैंडल लाइटिंग करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु. मुन्नी, ब्र.कु. भारती दीदी, राजयोगिनी ईशू दादी, ब्र.कु. सरला तथा ब्र.कु. शारदा।

पवित्र राह चुना है पवित्र कन्याओं ने,
परमात्मा के साथ सगाई चिरकाल की।
यह राह ले जायेगी स्वर्णिम दुनिया की ओर,
इन्हीं की होती आरतियाँ, ये हैं जगत जननी पार्वतियाँ।।

चाइना-गुआंगझोउ। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ तथा कॉन्सुलेट जेनरल ऑफ इंडिया के संयुक्त तत्वावधान में सिटी सेंटर के फाइव स्टार होटल में आयोजित कार्यक्रम के दौरान समूह चित्र में ब्र.कु. सपना तथा अन्य भाई बहनें।

जगन्नाथपुरी-ओडिशा। सेवाकेन्द्र में आने पर आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. प्रतिमा, फादर जोशी जॉर्ज, क्रिस्टो ज्योति महाविद्यालय, सासन,सम्बलपुर के विद्यार्थीगण तथा अन्य।

जोगिन्दर नगर-हि.प्र.। सामुदायिक भवन में आयोजित कार्यक्रम में लोगों को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. भारत भूषण।